



JUSTICE MR. AHAMED MOOSA EBRAHIM

Hon'ble Justice Mr. Ahamed Moosa Ebrahim was born on December 2, 1937 in Kadoma, Zimbabwe. His is a rare case of a person of Indian origin elevated to the status of Supreme Court Judge in Zimbabwe. Justice Ebrahim completed his secondary education in England and was admitted as Barrister-at-Law (Lincoln's Inn, London) in 1962. He was appointed as an Advocate in Zimbabwe in 1966 and Senior Counsel in 1983. He was also Legal Adviser to Government of Zimbabwe on Industrial Treaties. He rose to the position of Judge of Supreme Court in 1990, a position he occupied until his retirement in 2002.

Justice Ebrahim has been in the fore-front of efforts aimed at promoting communal harmony in Zimbabwe, acting as a bridge between the Hindu and Muslim communities in Harare. He is highly respected by both the communities.

He is prominent in the Zimbabwean cricket world and played crucial role in encouraging black Zimbabwean cricketers when the game was dominated by the whites. He is presently Vice Chairman of the Zimbabwe Cricket Union. He is also Member of the International Cricket Council as a Match Referee, being Zimbabwe's representative on the panel. Justice Ebrahim has been also active in promotion of art and culture. Currently, he is Chairman of a Cultural Organisation in Zimbabwe.

Justice Mr. Ahamed Moosa Ebrahim is recognized for his contribution in the service of Diaspora.



न्यायमूर्ति श्री अहमद मूसा इब्राहिम

माननीय न्यायमूर्ति श्री अहमद मूसा इब्राहिम का जन्म 2 दिसम्बर, 1937 में कडोमा, जिम्बाबवे में हुआ था। वे जिम्बाबवे में किसी भारतीय मूल के व्यक्ति के उच्चतम न्यायालय में जज हो जाने का विरला उदाहरण हैं। न्यायमूर्ति इब्राहिम ने अपनी माध्यमिक शिक्षा इंग्लैंड में पूरी की और 1962 में बैरिस्टर एट लॉ (लिनकन्स इन, लंदन) में दाखिला लिया। उन्हें 1966 में जिम्बाबवे में अधिवक्ता और 1983 में वरिष्ठ काउंसिल के तौर पर नियुक्त किया गया। वे जिम्बाबवे सरकार में औद्योगिक संधियों पर विधिक सलाहकार भी रहे हैं। उन्होंने 1990 में उच्चतम न्यायालय के जज का पद प्राप्त किया जिस पर वे 2002 में अपनी सेवानिवृत्ति तक बने रहे।

न्यायमूर्ति इब्राहिम ने हारारे में हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करते हुए जिम्बाबवे में सामुदायिक सौहार्द्र के संवर्द्धन हेतु हो रहे प्रयासों में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्हें दोनों समुदायों का सम्मान हासिल है।

जिम्बाबवे क्रिकेट की दुनिया में वे महत्वपूर्ण हैं और जब इस खेल में श्वेतों का बोल बाला था तो उन्होंने जिम्बाबवे के अश्वेत क्रिकेटर्स को प्रोत्साहित करने में अहम् भूमिका निभाई। वे इस समय जिम्बाबवे क्रिकेट यूनियन के उपाध्यक्ष हैं। वे पैनल पर जिम्बाबवे के प्रतिनिधि होने के नाते मैच रैफरी के तौर पर अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के सदस्य भी हैं। न्यायमूर्ति इब्राहिम कला और संस्कृति के संवर्द्धन में भी सक्रिय रहे हैं। इस समय वे जिम्बाबवे के सांस्कृतिक संगठन के अध्यक्ष हैं।

न्यायमूर्ति श्री अहमद मूसा इब्राहिम भारतवंशियों की सेवा में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं।



H.E. BHARRAT JAGDEO

His Excellency Mr. Bharrat Jagdeo, President of the Cooperative Republic of Guyana has been involved in public affairs for more than two decades. His political life began at the tender age of 13 when he joined the Youth Wing of the Indo-Guyanese People's Progressive Party (PPP). Three years later, he qualified for membership in the PPP. Subsequently, he was elected to leadership position in the PPP's District and Regional Committees of Upper East Coast of Guyana.

His Excellency Mr. Bharrat Jagdeo has an illustrious career. Trained in Economics, he acted as the Prime Minister of Guyana on several occasions and supervised several Government Ministries. Over the years, His Excellency Jagdeo attained the reputation as a "go-getter" "hands on Minister", and as someone who is willing to go extra mile to fight corruption and to ensure clean and honest governance. He won plaudits for the campaign for debt relief for Guyana and all heavily indebted countries. He also held a number of posts in local and international financial bodies including Governor of the International Monetary Fund. He was sworn in as the President of Guyana in August 1999 and elected as the President in March 2001. He has been instrumental in opening up the Guyanese economy. He strove for ethnic harmony in Guyanese politics and society. He has contributed immensely to the cause of Guyana in bilateral fora, regionally and globally and enhanced the profile of Guyana.

His Excellency Bharrat Jagdeo is recognized by the Pravasi Bharatiya Samman Awards for his service to Indian Diaspora.

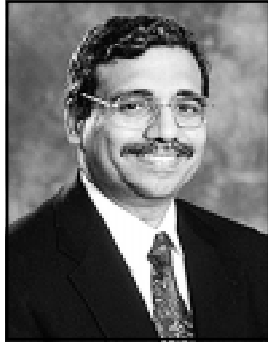


महामहिम भरत जगदेव

गुयाना सहकारी गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री भरत जगदेव दो दशकों से भी अधिक समय से सार्वजनिक जीवन में हैं। उनके राजनैतिक जीवन की शुरुआत 13 वर्ष की किशोरावस्था में हुई जब वे इन्डो-गुयानीज पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी (पी पी पी) की युवा शाखा में शामिल हुए। तीन वर्ष बाद उन्हें पी पी पी की सदस्यता प्राप्त हो गई। बाद में उन्हें गुयाना के ऊपरी पूर्वी तट से सम्बद्ध पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी की जिला एवं क्षेत्रीय समितियों में नेतृत्व के पदों पर चुना गया।

महामहिम श्री भरत जगदेव का जीवन यशस्वी रहा है। अर्थशास्त्र में प्रशिक्षित श्री जगदेव जी ने अनेक अवसरों पर गुयाना के प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया और अनेक सरकारी मंत्रालय संभाले। महामहिम जगदेव जी को पिछले कई सालों में एक जुझारू एवं कर्तव्य-दक्ष मंत्री के रूप में और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है जो भ्रष्टाचार का मुकाबला करने और साफ सुथरा एवं ईमानदार प्रशासन सुनिश्चित करने हेतु अथक परिश्रम करने के लिए तत्पर हैं। गुयाना के लिए तथा भारी कर्ज में डूबे सभी देशों के लिए कर्ज राहत हेतु अभियान चलाने के लिए उन्हें भारी प्रशंसा मिली। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के गवर्नर के पद सहित वे स्थानीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय निकायों में अनेक पदों पर रहे हैं। अगस्त, 1999 में उन्हें गुयाना के राष्ट्रपति के रूप में शपथ दिलाई गई और फिर मार्च, 2001 में वे राष्ट्रपति के रूप में चुने गए। गुयाना की अर्थव्यवस्था के उदारीकरण में उन्होंने मुख्य भूमिका निभाई है। गुयाना की राजनीति और समाज में जातीय सद्भाव बनाए रखने के लिए उन्होंने गहन प्रयास किए। द्विपक्षीय मंचों पर क्षेत्रीय रूप से और वैश्विक स्तर पर गुयाना के हित संवर्द्धन में उन्होंने भारी योगदान किया है और गुयाना की छवि निखारी है।

भारतवंशियों के प्रति सेवा के लिए महामहिम श्री भरत जगदेव को “प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार” से सम्मानित किया गया है।



PROF. DIPAK C. JAIN

Prof. Dipak C. Jain is the youngest and the first person of Indian origin to become the Dean of reputed Kellogg School of Management in USA.

Born in the family of teachers in the State of Assam, India. Prof. Jain had a brilliant academic career. After college education in Guwahati in Statistics, he studied Business Management in Stockholm School of Economics, Sweden and the University of Texas at Dallas. He has to his credit many awards and honors, such as - Jawaharlal Nehru Merit Award, Government of India 1976; Youth Merit Award, Rotary International 1976; Outstanding Educator Award, State of Assam, India 1982; Kraft Research Professorship, Northwestern University 1990-91 and 1989-90; John D.C. Little Best Paper Award 1991; Sidney Levy Award for Excellence in Teaching 1995; Best Professor Award, Koblenz Business School (Germany), 1999-2000; Outstanding Professor of the Year, Nijenrode University (The Netherlands), 2000 and the Alumni Reunion Outstanding Professor of the Year, Kellogg School, 2002.

He has served as a Consultant to IBM, Sears, US Robotics, US Cellular, AT & T, Motorola, Harris Semi Conductor, Eli Lilly, Thomsen Electronics, Phillips and Hyatt International. He has had more than 30 articles published in leading academic journals. Mr. Jain has also served as editor and member of the editorial board to many International Business, Economic and Marketing journals.

Prof. Jain is recognized for enhancing the image of the Indian Diaspora through his excellence in Management Studies and Pedagogy.



प्रो० दीपक सी० जैन

प्रो० दीपक सी० जैन संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित प्रतिष्ठित कैलॉग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट के डीन होने वाले सबसे कम उम्र के और भारतीय मूल के प्रथम व्यक्ति हैं ।

भारत के असम राज्य में शिक्षकों के परिवार में जन्म लेने वाले प्रो० जैन का प्रखर शैक्षणिक कैरियर रहा है । गुवाहाटी में सांख्यिकी में कॉलेज की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने स्टॉकहोम स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स, स्वीडन और डलास के टेक्सास विश्वविद्यालय में व्यापार प्रबंधन का अध्ययन किया । उन्हें अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जैसे जवाहर लाल नेहरू मेरिट पुरस्कार, भारत सरकार, 1976, यूथ मेरिट अवार्ड, रोटरी इन्टरनेशनल 1976, आउटस्टैंडिंग एड्युकेटर अवार्ड, असम राज्य, भारत 1982, हस्तशिल्प शोध प्रोफेसरशिप, उत्तरपूर्वी विश्वविद्यालय 1990-91 और 1989-90; जॉन डी० सी० लिटिल बेस्ट पेपर अवार्ड 1991; सिडनी लेवी अवार्ड फार एक्सेलेंस इन टीचिंग 1995; बेस्ट प्रोफेसर अवार्ड, कोब्लेंज बिजनेस स्कूल (जर्मनी), 1999-2000; आउटस्टैंडिंग प्रोफेसर ऑफ द ईअर, निजेनरोड विश्वविद्यालय (द नीदरलैंड्स), 2000 और आलम्नी रीयूनियन आउटस्टैंडिंग प्रोफेसर ऑफ द ईअर, कैलॉग स्कूल, 2002.

उन्होंने आई बी एम, सिअर्स, यू० एस० रोबोटिक्स, यू० एस० सेल्यूलर, ए० टी० एण्ड टी०, मोटोरोला, हैरिस सेमी कण्डक्टर, एली लिली, थॉम्पसन इलेक्ट्रॉनिक्स, फिलिप्स और हयात इंटरनेशनल के लिए परामर्शदाता के रूप में कार्य किया । उनके अग्रणी शैक्षिक जर्नलों में 30 से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं । श्री जैन ने अनेक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, अर्थविज्ञान के और विपणन जर्नलों में संपादक और संपादक मंडल के सदस्य के तौर पर कार्य किया है ।

प्रो० जैन प्रबंधन अध्ययन और शिक्षाशास्त्र में अपनी उत्कृष्टता के माध्यम से भारतवंशियों की छवि को सुधारने के लिए पहचाने जाते हैं ।



SHRI FITZ REMEDIOS SANTANA DE SOUZA

Shri Fitz Remedios Santana De Souza was born in Mumbai in 1929 into a family that originally hailed from Goa. His parents moved to Zanzibar in 1932 and finally to Kenya, the country of his adoption, in 1942. Shri Fitz De Souza received his early education in Zanzibar and Kenya and then went to England to study Law.

Shri Fitz De Souza returned to Kenya in 1952 and worked in close association with the Kenyan Leader Jomo Kenyatta in the Kenyan independence struggle. Shri De Souza worked to organize Asians and Africans against the colour bar then being practiced in the country. In the early 1960s, he participated in the Lancaster House Conference, held to deliberate and decide constitutional and electoral framework of independent Kenya. When Kenya became free, he was not only elected as a Member of Parliament but was made the Deputy Speaker of the Lower House, a position he held till 1969-70.

Shri De Souza has made significant contribution to the growth of democratic values and public institutions in Kenya. He made a principled exit from public life in the 70s and returned to his private law practice refusing many offers of high positions.

Shri De Souza continues his private law practice today and is regarded as a political thinker and visionary by a strong section of country's political elite. Shri De Souza is recognized for his contribution to the Indian Diaspora in Kenya through community leadership and idealism.



श्री फिट्ज़ रेमेडियोज़ सन्ताना डिसूज़ा

श्री फिट्ज़ रेमेडियोज़ सन्ताना डिसूज़ा का जन्म 1929 में मुम्बई में जिस परिवार में हुआ, वह मूलतः गोवा का रहने वाला था। उनके माता-पिता 1932 में जन्जीबार चले गए थे, और अन्त में 1942 में उनके अभिग्रहण के देश कीनिया में बस गए थे। श्री फिट्ज़ डिसूज़ा ने प्रारम्भिक शिक्षा जान्जीबार और कीनिया में प्राप्त की और उसके पश्चात् वे कानून की शिक्षा के लिए इंग्लैंड चले गए।

श्री फिट्ज़ डिसूज़ा 1952 में कीनिया लौट आए और कीनिया के स्वतंत्रता संग्राम में कीनिया के नेता जोमो केनयाटा के साथ निकट रूप से जुड़कर कार्य किया। श्री डिसूज़ा ने उस समय देश में चल रही रंग भेद प्रथा के विरुद्ध एशियाई तथा अफ्रीकियों को संगठित करने का कार्य किया। 1960 के प्रारम्भ में, उन्होंने संवैधानिक तथा निर्वाचन की रूपरेखा पर विचार-विमर्श करने और उसका निर्धारण करने के लिए आयोजित लैन्कास्टर हाउस कान्फ्रेंस में भाग लिया। जब कीनिया स्वतंत्र हुआ तो उन्हें न केवल संसद सदस्य चुना गया अपितु लोअर हाउस का डिप्टी स्पीकर बनाया गया; जिस स्थान पर वह 1969 -70 तक बने रहे।

श्री डिसूज़ा ने कीनिया में लोकतांत्रिक मूल्यों और सार्वजनिक संस्थानों के विकास में विशिष्ट योगदान दिया है। 1970 में उन्होंने सार्वजनिक जीवन को छोड़ दिया और उच्च पदों की कई पेशकश को टुकराकर वह निजी कानून की प्रैक्टिस दुबारा करने लगे।

श्री डिसूज़ा ने आज भी अपनी निजी कानून की प्रैक्टिस जारी रखी है और आज वह देश के विशिष्ट राजनीतिक धड़े में एक राजनीतिक विचारक और स्वप्नद्रष्टा माने जाते हैं। श्री डिसूज़ा सामूहिक नेतृत्व और आदर्शवाद के माध्यम से कीनिया में भारतवंशियों के लिए उनके योगदान के लिए जाने जाते हैं।



DR. KALPANA CHAWLA

Dr. Kalpana Chawla's is a story of a young and brilliant Indian American astronaut whose life was cut short by a tragic incident. The first Indian-American astronaut to fly in the US Space Shuttle, this extra-ordinarily brave woman of Indian origin made the Diaspora proud by her professional achievement in aerospace engineering.

India and her Diaspora deeply mourned when Dr. Kalpana Chawla along with her companions in the Space Shuttle Columbia perished during re-entry of the space vehicle, 16 minutes prior to its scheduled landing on February 1, 2003. Born in Karnal, India, she obtained degrees in Aeronautical Engineering from Punjab Engineering College in India and University of Texas and Doctorate from University of Colorado in USA. She was a Researcher with NASA till 1994 when she was selected as an Astronaut candidate. She became the first astronaut from the Diaspora when she was made a member of the crew of Space Shuttle STS-87 Columbia (1997).

Dr. Kalpana Chawla is awarded the Pravasi Bharatiya Samman Award posthumously for her significant contribution in expanding the frontiers of knowledge and in being a source of inspiration to the youth in general and to the youth of Diaspora in particular. Her life will continue to inspire generations to strive in pursuit of knowledge and to work with single-minded devotion towards realizing one's dream.



डा0 कल्पना चावला

डा0 कल्पना चावला की कहानी एक युवा और प्रतिभाशाली भारतीय अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री की कहानी है जिनका निधन एक दुखद हादसे में हो गया । पहली भारतीय - अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री के रूप में, जिन्होंने अमेरिकी स्पेस शटल में उड़ान भरी, असाधारण रूप से साहसी इस भारतीय मूल की महिला ने एयरो स्पेस इंजीनियरिंग में अपनी व्यवसायिक उपलब्धि द्वारा भारतवंशियों को गर्वित किया।

भारत और भारतवंशियों ने गहन शोक प्रकट किया जब 1 फरवरी, 2003 को स्पेसशटल के पुनः प्रवेश के दौरान धरती पर उतरने के निर्धारित समय से 16 मिनट पहले डा0 कल्पना चावला स्पेस शटल कोलंबिया के अपने सहयात्रियों के साथ दुर्घटना का शिकार हो गयी । करनाल, पंजाब में जन्मी डा0 कल्पना ने भारत में पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज और टैक्सास विश्वविद्यालय से डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की । वर्ष 1994 तक वो नासा में एक शोधकर्ता थीं जब उन्हें एक अंतरिक्ष यात्री उम्मीदवार के रूप में चुना गया । वो भारतवंशियों में से पहली अंतरिक्ष यात्री बनीं जब वे स्पेस शटल एस टी एस - 87 कोलम्बिया (1992) के दल की एक सदस्य बनीं ।

डा0 कल्पना चावला ने सरहदों के ज्ञान के विस्तार में और सामान्य युवा और विशेष रूप से युवा भारतवंशियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । उनका जीवन ज्ञान की खोज में प्रयासरत रहने को और अपने सपनों को साकार करने में एकाग्रता से लगी हुई पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा ।



LORD MEGHNAD DESAI

Meghnad Jagdish Chandra Desai, popularly known as Lord Meghnad Desai, is a Member of the House of Lords, UK. He was made life peer in 1991.

A graduate from the University of Bombay, he received his Doctorate from University of Pennsylvania. He was closely associated with London School of Economics, where he was successively, a Lecturer, Senior Lecturer, Reader, Professor and Director of the Centre for the Study of Global Governance. His experience and knowledge of economics and governance was utilized by the Governments of UK and Algeria and International Organisations like UNFAO, UNCTAD, World Bank, UNIDO and UNDP. He has written many books including 'Marxian Economic Theory', 'Applied Economics', 'Testing-Monetarism'.

Lord Meghnad Desai is recognized for his outstanding contribution in the area of Economics and education which enhanced the image of the Indian Diaspora.



लॉर्ड मेघनाद देसाई

मेघनाद जगदीश चन्द्र देसाई, जिन्हें लॉर्ड मेघनाद देसाई के नाम से जाना जाता है, हाऊस ऑफ लॉर्ड के सदस्य हैं। उन्हें 1991 में लाइफ पीअर बनाया गया।

बम्बई विश्वविद्यालय से स्नातक, श्री देसाई ने पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय से डाक्टर की उपाधि प्राप्त की। वे लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स से निकट से जुड़े थे, जहां वे अलग से प्राध्यापक, वरिष्ठ प्राध्यापक, रीडर, प्रोफेसर और सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ ग्लोबल गवर्नेंस के डॉक्टर थे। ब्रिटेन, अल्जीरिया और यू एन एफ ए ओ, यू एन सी टी ए डी, विश्व बैंक, यूनीडो और यू एन डी पी जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने उनके अनुभव और ज्ञान का लाभ उठाया। उन्होंने “मार्क्सियन इकनॉमिक थ्योरी” “अप्लाइड इकनॉमिक ट्रिक्स” “टेस्टिंग - मोनेटेरिज्म” सहित कई पुस्तकें लिखीं।

लॉर्ड मेघनाद देसाई को अर्थशास्त्र के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए पहचाना जाता है जिसने भारतवंशियों की छवि को उभारा है।



DR. MARIAM CHISTI

Dr. (Mrs.) Mariam Chisti is a Senior Consultant in Obstetrics and Gynaecology, Jahra Hospital, Kuwait. She is an eminent doctor, who has raised the reputation of Indian medical professionals in the eyes of the citizens of her adapted homeland, medical experts and the government. She has earned recognition for excellence as a surgeon, medical consultant, researchers and administrator.

She did her MBBS from Lady Hardinge Medical College and Hospital, New Delhi in 1959. She did her M.D. in Obstetrics and Gynaecology from the same college. She became a fellow of International College of Surgeons in 1983. Her articles have been published widely in various international journals. She is involved in a wide range of research work and took active part in scientific activities related to Obstetrics and Gynaecology in Kuwait.

Dr. Chisti has been awarded certificate of excellent performance in Obstetrics and Gynaecology and is a member of the various Indian and International bodies like, Indian Medical Council, British Medical Council and Kuwait Medical Council. She is also life member of Infertility Society of America and Middle East Fertility Society.

Dr. (Mrs.) Mariam Chisti is recognized for enhancing the image of Indian Diaspora in the emirate of Kuwait, through her professional excellence.



डा० मरियम चिश्ती

डा० (श्रीमती) मरियम चिश्ती, जोहरा अस्पताल, कुवैत के प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग में वरिष्ठ परामर्शदाता हैं। वह एक प्रसिद्ध चिकित्सक हैं जिन्होंने अपने अंगीकृत देश के नागरिकों, चिकित्सा विशेषज्ञों और सरकार की नजरों में भारतीय चिकित्सा व्यवसायिकों की कीर्ति को फैलाया है। उन्होंने एक उत्कृष्ट शल्य चिकित्सक, चिकित्सा परामर्शदाता, अनुसंधानकर्ता और प्रशासक के रूप में ख्याति अर्जित की है।

उन्होंने लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज, नई दिल्ली से 1959 में एम बी बी एस पास की। इसी कालेज से उन्होंने प्रसूति और स्त्री रोग में एम डी की डिग्री हासिल की। 1983 में इन्टरनेशनल कालेज ऑफ सर्जन्स की फेलो बनीं। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में उनके लेखों को व्यापक जगह मिली है। वह विभिन्न अनुसंधान कार्यों में शामिल रही हैं तथा उन्होंने कुवैत में प्रसूति और स्त्री रोग से जुड़ी वैज्ञानिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया है।

डा० चिश्ती को प्रसूति और स्त्री रोग के क्षेत्र में किये गये कार्यों के लिए उत्कृष्टता का प्रमाण पत्र दिया गया है और वह इंडियन मेडिकल, ब्रिटिश मेडिकल काउन्सिल तथा कुवैत मेडिकल काउन्सिल जैसे विभिन्न भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय निकायों की सदस्य हैं। वह इनफर्टिलिटी सोसायटी ऑफ अमरीका तथा मिडिल ईस्ट इनफर्टिलिटी सोसायटी की आजीवन सदस्य भी हैं।

डा०(श्रीमती) मरियम चिश्ती को अपनी व्यवसायिक उत्कृष्टता के जरिए कुवैत अमीरात में भारतवंशियों की छवि को सुधारने के लिए जाना जाता है।



SHRI P. MOHAMED ALI

Shri P. Mohamed Ali, a long time resident of Oman, is known for his professional and business achievements, his outstanding contribution to social, cultural and educational causes and his philanthropic activities. In January 2002 he received the prestigious Oman Civil Order Award from His Majesty the Sultan of Oman for his meritorious services in the development of Oman.

Shri Mohamed Ali is the promoter of the first private engineering college and the first privately owned medical college and pharmacy college in Oman. He is the Vice Chairman of Omanisation Joint Committee, established by the Government of Oman to develop strategies for partnership between the Government and the private sector.

Shri Mohamed Ali is the recipient of several awards, decorations and citations for his accomplishments in business, public service and promotion of education.

Though a resident of Oman, his Flagship enterprise, the Galfar Group of Companies, has operations in the Middle East, the Far East and India. In India, he has established a manufacturing concern in Cochin, a construction company in Bangalore and hotels in Cochin and Trivandrum.

Shri Mohamed Ali is recognized for his service to the Diaspora and promotion of social, cultural and educational values of India.



श्री पी० मोहम्मद अली

श्री पी० मोहम्मद अली लम्बे समय से ओमान में रह रहे हैं और वे व्यवसायिक तथा वाणिज्यिक उपलब्धियों, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक क्षेत्रों में अपने उत्कृष्ट योगदान तथा अपनी लोकोपकारी गतिविधियों के लिए जाने जाते हैं। जनवरी, 2002 में उन्होंने ओमान के विकास में सराहनीय योगदान के लिए ओमान के महामहिम सुल्तान द्वारा प्रतिष्ठित ओमान सिविल ऑर्डर पुरस्कार प्राप्त किया।

श्री मोहम्मद अली ने ओमान में पहला इंजीनियरिंग महाविद्यालय और निजी स्वामित्व वाले पहले निजी चिकित्सा महाविद्यालय और फार्मसी महाविद्यालय की स्थापना में योगदान किया। वे सरकार और निजी क्षेत्र के बीच भागीदारी विकसित करने के लिए ओमान सरकार द्वारा स्थापित की गयी ओमान संयुक्त समिति के उपाध्यक्ष हैं।

श्री मोहम्मद अली को व्यवसाय लोक सेवा तथा शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक पुरस्कार अलंकरण तथा प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुए हैं।

हालांकि वे ओमान के नागरिक हैं, उनके फ्लैगशिप उपक्रम, गल्फार समूह की कंपनियाँ मध्य पूर्व, सुदूर पूर्व और भारत में भी व्यवसाय कर रही हैं। भारत में उन्होंने कोचीन में एक निर्माण इकाई, बंगलोर में एक निर्माण कंपनी तथा कोचीन और त्रिवेन्द्रम में होटलों की स्थापना की है।

श्री मोहम्मद अली को भारतवंशियों के लिए उनकी सेवा और भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है।



SHRI MAHENDRA PAL CHAUDHRY

Shri Mahendra Pal Chaudhry is Member of Parliament in Fiji and the leader of the Fiji Labour Party. Before coming into active public life, he worked in the office of the Auditor General of Fiji. In 1975, he resigned from the job to take up a full time position of General Secretary of Fiji Public Service Association. He has a long and distinguished career in trade union movement and is credited with initiating measures that relate to pay and working conditions in the public service. He has also been a member of statutory boards like the Fiji National Training Council.

Shri Chaudhry's is a remarkable political career. He was the founder member of Fiji Labour Party and was elected to the House of Representatives in 1987 when he was made the Finance Minister. In 1992 and 1994 he was elected to the House of Representatives as Member of Ba West Indian Constituency. Since 1992 he has held charge of the Parliamentary Leader and the Secretary General of the Fiji Labour Party. In 1999 he rose to the position of the Prime Minister of Fiji. He was re-elected to the parliament in 2001 and is awaiting a court ruling on his constitutional right as leader of the Fiji Labour Party to be included in the government under power sharing requirement as required by the constitution of Fiji.

Shri Chaudhry is recognized for his service in the cause of the Diaspora and for promoting Indian values, culture and tradition abroad.



श्री महेन्द्र पाल चौधरी

श्री महेन्द्र पाल चौधरी फिजी में सांसद हैं और फिजी लेबर पार्टी के नेता भी । सक्रिय सार्वजनिक जीवन में आने से पूर्व उन्होंने फिजी के महालेखा- परीक्षक कार्यालय में कार्य किया । वर्ष 1975 में फिजी पब्लिक सर्विस एसोसिएशन के महा सचिव का पूर्ण कालिक दायित्व ग्रहण करने के लिए उन्होंने सेवा से त्यागपत्र दे दिया । ट्रेड यूनियन गतिविधियों में उनका दीर्घ कालिक एवं विशिष्ट अनुभव रहा है और लोक सेवा में वेतन एवं कार्य - दशाओं से जुड़े कदम उठाने का श्रेय उन्हें प्राप्त है । फिजी राष्ट्रीय प्रशिक्षण परिषद् जैसे सांविधिक निकायों के भी वे सदस्य रहे हैं ।

श्री चौधरी का राजनैतिक जीवन उल्लेखनीय है । फिजी लेबर पार्टी के वे संस्थापक सदस्य रहे और 1987 में हाउस ऑफ रेप्रेजेंटेटिव्स के लिये चुने जाने पर उन्हें वित्त मंत्री बनाया गया था । 1992 एवं 1994 में उन्हें जुवा वेस्ट इंडियन क्षेत्र से हाउस ऑफ रेप्रेजेंटेटिव्स का सदस्य चुना गया । 1992 से उन्होंने फिजी लेबर पार्टी के संसदीय नेता और महासचिव का पद संभाला हुआ है । 1999 में वे फिजी के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचे । वर्ष 2001 में उन्हें संसद के लिए पुनः चुना गया और फिजी लेबर पार्टी के नेता के रूप में अपने संवैधानिक अधिकार के बारे में फिजी के संविधान द्वारा यथापेक्षित सत्ता सहभागिता की शर्त के अधीन सरकार में शामिल किए जाने के लिए उन्हें न्यायालय के आदेश की प्रतीक्षा है ।

श्री चौधरी को भारतवंशियों के हित में उनकी सेवाओं के लिए और विदेश में भारतीय मूल्यों, संस्कृति एवं परम्परा को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है ।



DR. NARINDER SINGH KAPANY

Dr. Narinder Singh Kapany resident in the Silicon Vallley, USA, since 1960 is known for his contribution to Optics technology and philanthropic endowment and promotion of Indian art. .

Born in Moga in Punjab and raised in Dehra Dun, Kapany studied Optics at the Imperial College of Science and Technology, London. He taught at the University of Rochester in New York and later at the Illinois Institute of Technology. Subsequently he moved to California to start his own Optics Technology Venture. He has published four books on Opto-electronics.

Dr. Kapany has promoted Indian Art abroad. In May 2000 he had taken the Arts of the Sikh Kingdom Exhibition from London Victoria Albert Museum to San Francisco. He is known for the generous gifting of his own art collections to the Asian Art Museum. His donation to the Museum to establish an Art Gallery earned him a distinction and accolades. He instituted the Kundan Kaur Chair of Sikh studies at the University of California, Santa Barbara.

Dr. Kapany is recognized for his contribution in promoting Indian arts and Indian studies abroad and for his philanthropic activities.



डॉ० नरिन्दर सिंह कपानी

डॉ० नरिन्दर सिंह कपानी अमरीका की सिलीकन वैली में रहते हैं, 1960 में जब इस स्थान को प्रसिद्धि मिली थी, उससे भी पहले इनको प्रकाश विज्ञान प्रौद्योगिकी और लोकोपकार की प्रतिभा तथा भारतीय कला के संवर्द्धन में इनके योगदान के लिए जाना जाता है ।

पंजाब के मोगा में जन्मे और देहरादून में पले - बड़े कपानी ने लन्दन के इम्पीरीयल कालेज ऑफ साइन्स एन्ड टेक्नोलॉजी में प्रकाश विज्ञान का अध्ययन किया । उन्होंने न्यूयार्क में रोचेस्टर विश्वविद्यालय में और बाद में इलिनॉयजी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में पढ़ाया । इसके पश्चात् अपना प्रकाश विज्ञान उद्यम आरम्भ करने के लिए वह कैलीफोर्निया चले गए । ऑप्टो - इलेक्ट्रॉनिक्स पर उनकी चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं ।

डॉ० कपानी ने विदेशों में भारतीय कला को विकसित किया । मई, 2000 में वह आर्ट ऑफ सिख किंगडम की प्रदर्शनी को लन्दन के विक्टोरिया अल्बर्ट संग्रहालय से सान फ्रांसिस्को ले गए । उनको एशियन कला संग्रहालय में अपने स्वयं के कला संग्रह को उपहार में देने के लिए जाना जाता है । संग्रहालय को एक आर्ट गैलरी स्थापित करने में उनके अंशदान के लिए उन्हें सम्मान और पुरस्कार मिला। उन्होंने सान्ता बारबारा के कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय में कुन्दन कौर चेयर ऑफ सिख स्टडीज़ की स्थापना की ।

डॉ० कपानी विदेश में भारतीय कलाओं और भारतीय अध्ययन में योगदान देने और उसका विकास करने तथा उनकी लोकोपकारी गतिविधियों के लिए जाने जाते हैं ।



SHRI SHASHI THAROOR

Shri Shashi Tharoor is a well-known writer, scholar and international civil servant. Born in London in 1956, Mr. Tharoor had his education in Bombay, Calcutta and Delhi. He received Doctorate degree from the Fletcher School of Law and Diploma at the young age of 22.

Since 1978, he worked for the United Nations in various capacities serving with the UN High Commission for Refugees, whose Singapore office he headed during the boat people crisis. As a Senior Official of the UN, he was responsible for peace-keeping operations in the former Yugoslavia. Later on, he was Director of Communications and Special Projects in the Office of the UN Secretary General. From June 2002, he was the Under Secretary General for Communications and Public Information of the United Nations.

Matching his brilliant record as International Civil Servant is his contribution as a writer on contemporary political and social themes. Shri Tharoor is the author of numerous articles, short stories and commentaries, published in Indian and Western publications. He is winner of several journalism and literary awards, including Commonwealth Writers' prize. In 1998, the Association of Indians in America and the Network of Indian Professionals awarded him the Excelsior Award for Excellence in Literature. He was named by the World Economic forum in Davos as a Global Leader of Tomorrow.

Shri Shashi Tharoor is recognized for achieving excellence in his chosen fields and for enhancing the profile and the image of the Indian Diaspora.



श्री शशि थरूर

श्री शशि थरूर एक सुप्रसिद्ध लेखक, विद्वान और अंतर्राष्ट्रीय लोक सेवक हैं। श्री थरूर का जन्म 1956 में लंदन में हुआ तथा उनकी शिक्षा बम्बई, कलकत्ता और दिल्ली में हुई। 22 वर्ष की अल्प आयु में फ्लेचर स्कूल ऑफ लॉ एंड डिप्लोमा से उन्होंने डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।

1978 से उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में विभिन्न पदों पर कार्य किया और वे बोट पीपुल क्रायशिस के दौरान संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायोग के सिंगापुर कार्यालय के प्रमुख थे। संयुक्त राष्ट्र के एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में वे पूर्व युगोस्लाविया में शांति-रक्षा कार्रवाईयों के लिए जिम्मेदार थे। तत्पश्चात वे संयुक्त राष्ट्र महासचिव के कार्यालय में संचार और विशेष परियोजनाओं के निदेशक हुए। जून 2002 से वे संयुक्त राष्ट्र में संचार और सार्वजनिक सूचना के अवर महासचिव थे।

एक उत्कृष्ट अंतर्राष्ट्रीय लोक सेवक के साथ ही उन्होंने समकालीन राजनीति और सामाजिक विषयों पर लेखक के रूप में भी अपना योगदान दिया है। श्री थरूर ने अनेक लेख, लघु कथाएं और टीकाएं लिखी हैं जो भारतीय और पश्चिमी प्रकाशनों में प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्रकुल लेखक पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कार जीते हैं। 1998 में अमरीका में भारतीयों के संगठन और भारतीय व्यवसायिकों के नेटवर्क ने उन्हें साहित्य में उत्कृष्टता के लिए एक्सेलिसियर पुरस्कार से सम्मानित किया। विश्व आर्थिक मंच दाबोस ने उन्हें विश्व का भावी नेता कहा।

श्री शशि थरूर को अपने कार्य क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए और भारतवंशियों की छवि को निखारने के लिए जाना जाता है।



SHRIMATI SUKHI TURNER

Shrimati Sukhi Turner is the Mayor of Dunedin, New Zealand. Shrimati Sukhi Turner's political career began with her election as Councillor of Dunedin in 1992. Later she created history by becoming the youngest and the first woman Mayor in 1995 by defeating the incumbent Mayor. She was re-elected in 1998 and won for the third time in 2001. She represents the Green Party of Aotearoa, New Zealand. She is one of the few Indians who has risen to such heights in the politics of New Zealand.

Shrimati Sukhi Turner is considered torchbearer of the politics of change. She is interested in enhanced democratic processes, the sustainability of environment and the community participation in decisions at the local government. She has ushered in what is called an "inclusive and transparent" style of functioning. Every month she administers the citizenship oath to fifty odd new immigrants and believes in the philosophy of "Think Globally, Act Locally and Respond Personally". She has been conferred last year the honour of 'Distinguished Companion of the New Zealand Order of Merit'.

Shrimati Turner has always been in the forefront of promoting the interests of Indian community in New Zealand.

Shrimati Sukhi Turner is recognized for promoting Indian values abroad and her contribution to Diaspora in its political, social and economic integration with the community at large in New Zealand.



श्रीमती सुखी टर्नर

श्रीमती सुखी टर्नर न्यूजीलैंड में डुनेडिन की मेयर हैं। श्रीमती सुखी टर्नर का राजनीतिक जीवन 1992 में डुनेडिन की काउंसलर के रूप में चुनाव जीतने के साथ ही शुरू हुआ। बाद में उन्होंने 1995 में पदस्थ मेयर को पराजित कर सबसे कम आयु और प्रथम महिला मेयर बनकर इतिहास रचा। 1998 में वे पुनः चुनी गईं और 2001 में तीसरी बार विजयी हुईं। वे, न्यूजीलैंड की ग्रीन पार्टी ऑफ ओटोओरा का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे, न्यूजीलैंड की राजनीति में ऐसी ऊँचाइयों तक पहुंचने वाले गिने चुने भारतीयों में से एक हैं।

श्रीमती सुखी टर्नर को बदलाव की राजनीति का मार्गदर्शक माना जाता है। वे, स्थानीय सरकार में संवर्द्धित प्रजातांत्रिक प्रक्रियाओं, पर्यावरण की रक्षा और निर्णयों में सामूहिक भागीदारी में विश्वास करती हैं। उन्होंने “सबको साथ लेकर चलने और पादर्शिता की नीति” प्रारम्भ की। वे, हर माह लगभग 50 अप्रवासियों को नागरिकता की शपथ दिलवाती हैं और वे, विश्व स्तर पर सोचने, स्थानीय स्तर पर कार्य करने और कार्य में स्वयं जुट जाने की सोच में विश्वास करती हैं। पिछले वर्ष उन्हें “डिस्टिंग्विस्ट कम्पैनियन ऑफ द न्यूजीलैंड आर्डर ऑफ मैरिट” सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्रीमती टर्नर, न्यूजीलैंड में भारतीय समुदाय के हितों को बढ़ावा देने के लिए सदैव तैयार रहती हैं।

श्रीमती सुखी टर्नर को विदेश में भारतीय मूल्यों को बढ़ावा देने और न्यूजीलैंड की जनता के साथ भारतवंशियों के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक एकीकरण में योगदान के लिए जाना जाता है।

| | |
|--|----|
| 1. Justice Mr. Ahamed Moosa Ebrahim | 1 |
| न्यायमूर्ति श्री अहमद मूसा इब्राहिम | 1 |
| 2. H.E. Bharrat Jagdeo | 2 |
| महामहिम भरत जगदेव | 2 |
| 3. Prof. Dipak C. Jain | 3 |
| प्रो० दीपक सी० जैन | 3 |
| 4. Shri Fitz Remedios Santana DE Souza | 4 |
| श्री फिट्ज़ रेमेडियोज़ सन्ताना डिसूज़ा | 4 |
| 5. Dr. Kalpana Chawla | 5 |
| डा० कल्पना चावला | 5 |
| 6. Lord Meghnad Desai | 6 |
| लॉर्ड मेघनाद देसाई | 6 |
| 7. Dr. Mariam Chisti | 7 |
| डा० मरियम चिश्ती | 7 |
| 8. Shri P. Mohamed Ali | 8 |
| श्री पी० मोहम्मद अली | 8 |
| 9. Shri Mahendra Pal Chaudhry | 9 |
| श्री महेन्द्र पाल चौधरी | 9 |
| 10. Dr. Narinder Singh Kapany | 10 |
| डॉ० नरिन्दर सिंह कपानी | 10 |
| 11. Shri Shashi Tharoor | 11 |
| श्री शशि थरूर | 11 |
| 12. Shrimati Sukhi Turner | 12 |
| श्रीमती सुखी टर्नर | 12 |